

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 34, रहस्योद्घाटन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर व्याख्यान 34।

ठीक है, शुरू करने से पहले, बस कुछ घोषणाएँ, मुख्य रूप से अनुस्मारक के माध्यम से, वे दोनों परीक्षा से संबंधित हैं, सबसे पहले, इस गुरुवार है, वह कल सुबह 8 बजे इस कमरे में होगा, वहाँ होगा एक अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र हो, और उम्मीद है कि मेरे पास एक समीक्षा शीट भी होगी, ब्लैकबोर्ड पर एक अध्ययन गाइड भी होगा ताकि आप कुछ देख सकें, समीक्षा सत्र से कुछ समय पहले मेरे पास वह होगा। तो वह गुरुवार है, वह एक अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र है। मैं अभी भी संभावना पर काम कर रहा हूँ, हालांकि निश्चितता पर नहीं, लेकिन अंतिम परीक्षा के लिए समीक्षा सत्र की संभावना पर भी।

दूसरी बात यह है, जैसा कि मैंने कहा, यह शुक्रवार आपकी यहाँ आखिरी कक्षा है, सिवाय इसके कि मैं चला जाऊँगा, लेकिन अगले सोमवार को परीक्षा संख्या चार होगी, जिसमें रहस्योद्घाटन के माध्यम से इब्रानियों को शामिल किया गया है। हालाँकि मैं यहाँ नहीं रहूँगा, मेरे पास इस अवधि के दौरान परीक्षा की निगरानी करने के लिए कोई न कोई है, इसलिए आप सोमवार को उपस्थित होंगे, जैसा कि आप किसी भी कक्षा के लिए करते हैं, और आप परीक्षा संख्या चार देंगे, और फिर वह है यह फ़ाइनल तक है, जो मुझे लगता है कि फ़ाइनल सप्ताह का बुधवार, फ़ाइनल सप्ताह का 18वाँ दिन है। मुझे सटीक समय याद नहीं है, लेकिन इस शुक्रवार को मैं अंतिम परीक्षा के बारे में थोड़ी बात करूँगा, बस कुछ चीजों का उल्लेख करूँगा, और अंततः एक अध्ययन मार्गदर्शिका होगी।

मैं आपको यह भी याद दिलाऊँगा कि यदि आप देखना चाहते हैं, यदि आप पिछली परीक्षाओं की प्रतियां देखना चाहते हैं, तो आप मेरे कार्यालय में रुक सकते हैं और उन्हें ले सकते हैं, या यदि आप मुझे ईमेल करके उनके बारे में पूछना चाहते हैं, तो मैं आपको प्रतियां ईमेल कर सकते हैं. बेशक, मैं आपको अभी तक परीक्षा संख्या चार नहीं दे सकता, क्योंकि आपने वह परीक्षा नहीं दी है, लेकिन मैं आपको पहली तीन परीक्षाएं दे सकता हूँ, लेकिन फिर, मैं पूरे सप्ताह के लिए गायब हो जाऊँगा, इसलिए यदि आप नहीं हैं शुक्रवार तक रुकने और हार्ड कॉपी लेने में सक्षम, तो कृपया मुझे ईमेल करें और मैं आपको देखने और अध्ययन करने के लिए परीक्षाओं की प्रतियां ईमेल कर सकता हूँ, क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, अंतिम परीक्षा, हालांकि शब्द भिन्न हो सकते हैं, या उत्तर और प्रश्न के हिस्सों की अदला-बदली की जा सकती है या ऐसा कुछ, अंतिम परीक्षा में चार खंडों की परीक्षा के समान ही सामग्री शामिल होती है। कोई नई सामग्री नहीं है, इसलिए सेमेस्टर, पूरे सेमेस्टर से कुछ भी, निष्पक्ष खेल है, लेकिन यह वह सामग्री होगी जो चार-खंड परीक्षाओं में दिखाई दी थी।

यदि आपके नोट्स में ऐसी सामग्री है जो किसी भी अनुभाग परीक्षा में शामिल नहीं थी, तो आप उसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। इसलिए, फिर से, यदि आप पिछली परीक्षाएं देखना चाहते हैं, जैसा कि मैंने कहा, मुझे परवाह नहीं है कि आप उनके साथ क्या करते हैं, क्योंकि मैं यहां नहीं रहूंगा, इसलिए आप उन्हें या उस जैसा कुछ भी नहीं बेच सकते या उन्हें पास नहीं कर सकते पर, क्योंकि जो कोई भी अगले वर्ष न्यू टेस्टामेंट पढ़ा रहा है वह निस्संदेह बहुत, बहुत अलग परीक्षाओं का उपयोग करेगा, अपनी परीक्षाओं का उपयोग करेगा। कल, 8 बजे.

इस कमरे में 8 बजे। हाँ, हाँ, यहाँ, जेनक्स कमरा 406। अच्छा।

ठीक है, आइए प्रार्थना के साथ आरंभ करें, और मैं आज और शुक्रवार को जो करना चाहता हूँ, फिर, जिस समय हमारे पास शुक्रवार है, वह नए नियम की आखिरी पुस्तक, रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में बात करना है, जो मैं करना चाहता था थोड़ा अधिक समय व्यतीत करें, लेकिन विभिन्न कारणों से, हम उतना समय नहीं बिता पाएंगे जितना मैंने सोचा था, लेकिन फिर भी मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि पुस्तक क्या है और यह किस बारे में है और मुख्य रूप से आप पर छोड़ता हूँ यह किस प्रकार का साहित्य है, इसे देखते हुए इसे कैसे पढ़ा जाए, इसकी समझ, यह कैसे काम कर रही थी, इसकी रोशनी में रहस्योद्घाटन की पुस्तक को पढ़ने का एक समझदार तरीका क्या है, और हम आज इसके बारे में थोड़ी बात करेंगे, लेकिन आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। पिता, हमारा समर्थन करने और हमें बनाए रखने के लिए धन्यवाद, विशेष रूप से इस तनावपूर्ण समय के दौरान जब हम सेमेस्टर के अंत के करीब पहुंच रहे हैं, जिसका अर्थ है परियोजनाएं और फाइनल और अन्य सभी चीजों की प्रतीक्षा करना। भगवान, हम शक्ति और सहनशक्ति के निरंतर प्रावधान के लिए प्रार्थना करते हैं।

पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह हमें आपके वचन के बारे में स्पष्ट और समझदारी से सोचने से विचलित नहीं करेगा, और अब जब हम नए नियम और बाइबिल की आखिरी किताब पर विचार कर रहे हैं, पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इसे पढ़ने की इच्छा हममें पैदा करेंगे और इसे अधिक ध्यान से सुनें, बल्कि इसे समझदारी से पढ़ने की क्षमता भी रखें क्योंकि आप इसे समझना चाहते थे और जैसा आप इसे संप्रेषित करना चाहते थे। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

ठीक है। रहस्योद्घाटन की पुस्तक. यह एक तस्वीर है - मुझे नहीं पता कि क्या किसी ने कभी इन्हें देखा है या इनका अध्ययन किया है, लेकिन ये अल्ब्रेक्ट ड्रेहर द्वारा वुडकट्स की एक श्रृंखला है, और उन्होंने बुक ऑफ रिवीलेशन पर प्रसिद्ध लकड़ी की नक्काशी या वुडकट्स की एक श्रृंखला तैयार की है।

यह प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 है, सर्वनाश के तथाकथित चार घुड़सवार, जहां अध्याय 6 में, जब पहली चार मुहरों के टूटने के साथ पुस्तक की मुहरें टूट जाती हैं, तो एक अलग रंग का घोड़ा सवार के साथ घटनास्थल पर निकलता है जॉन के दृष्टिकोण का. लेकिन ये वुडकट्स कुछ प्रसिद्ध और प्रसिद्ध अभ्यावेदन हैं, रहस्योद्घाटन के दृश्य अभ्यावेदन जो हमें दिए गए हैं और बहुत प्रभावशाली हैं। लेकिन जब हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में सोचते हैं, और जब आप

सोचते हैं कि इसे पूरे इतिहास में कैसे पढ़ा और समझा गया है और इसका इलाज कैसे किया गया है, तो कम से कम दो संभावित सामान्य प्रतिक्रियाएं मिली हैं।

प्रतिक्रियाओं में से एक यह है कि मूल रूप से इसे अस्वीकार कर दिया जाए या इसे अनदेखा कर दिया जाए क्योंकि प्रकाशितवाक्य हमारे लिए एक अजीब किताब है, और हम पूछेंगे कि ऐसा क्यों है। लेकिन क्योंकि यह इतनी अजीब और अजीब किताब है, क्योंकि यह प्रतीकवाद और छवियों से भरी है जो कभी-कभी हमारे साथ बिल्कुल भी मेल नहीं खाती है, हमारे पास उनसे संबंधित करने के लिए कुछ भी नहीं है, उनमें से कुछ के साथ पहचान करने का लगभग कोई तरीका नहीं है। उनमें से कुछ हम करते हैं, लेकिन अन्य, मेरा मतलब है, कहाँ करते हैं - दुनिया में जॉन टिड्डियों के इस दर्शन का वर्णन करने में क्या कर रहे हैं जिनके मानव सिर और शेर की तरह दांत और बिच्छू की तरह पूंछ हैं? मेरा मतलब है, दुनिया में उसे वह कहां से मिला ? और रक्तपात और वध के ये सभी दृश्य, और बस अनिश्चितता जिसने इसकी व्याख्या को घेर लिया है और सभी प्रकार के तरीकों से इसे पढ़ा गया है, कुछ के लिए, एक प्रकार का प्रवेश न करने का संकेत है।

यह वैसा ही है जैसे रहस्योद्घाटन, हालांकि यह सील खोलने का दावा करता है, हालांकि जॉन अपनी दृष्टि में एक किताब देखता है जो खुली है, हम में से अधिकांश के लिए, रहस्योद्घाटन खुला रहता है या अभी भी सील रहता है। यानी, इसमें ऑफ-लिमिट्स या सावधानी का संकेत है, किताब के चारों ओर लिपटे पीले सावधानी टेपों में से एक, इसलिए हम इससे दूर रहते हैं और स्पष्ट रहते हैं। सुधार के समय में जॉन केल्विन जितने प्रतिभाशाली विद्वान, विचारक और धर्मशास्त्री थे, उन्होंने रहस्योद्घाटन को छोड़कर हर नए नियम की पुस्तक पर एक टिप्पणी लिखी क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि इसके साथ क्या करना है।

मेरी राय में, ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने उनकी सलाह और उनके नेतृत्व का पालन करना बेहतर समझा होगा। लेकिन यह एक संभावित तरीका यह है कि इसे नजरअंदाज कर दिया जाए और दूर चला जाए और पॉल के पत्रों की सुरक्षित जमीन पर वापस चला जाए, जहां हम विश्वास और मसीह के प्रति आज्ञाकारिता आदि द्वारा मुक्ति और औचित्य के बारे में पढ़ते हैं। दूसरा तरीका यह है कि इसके प्रति इतना जुनूनी हो जाएं कि यह हमारी सारी सोच, हमारी गतिविधि और हमारी सारी ऊर्जा का केंद्र बन जाता है।

तो, फिर से, यह दिलचस्प है, यदि आप अपने कंप्यूटर और Google रहस्योद्घाटन या सर्वनाश पर वापस जाएं, तो आपको संपूर्ण वेबसाइटें, और संपूर्ण मंत्रालय रहस्योद्घाटन की पुस्तक को समझने और व्याख्या करने के लिए समर्पित मिलेंगे। आपमें से अधिकांश लोग इससे परिचित हैं। यदि आपने उन्हें नहीं पढ़ा है, तो आपने उन्हें एक बिंदु पर देखा है, टिम लाहे और जेरी जेनकिंस द्वारा निर्मित लेफ्ट बिहाइंड श्रृंखला।

यद्यपि वे स्पष्ट रूप से काल्पनिक हैं, फिर भी वे सटीक रूप से चित्रित करने के लिए हैं कि ये पाठक क्या सोचते हैं कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक अंत में कैसे चलेगी। तो विचार यह है कि, जब आप इन पुस्तकों को पढ़ते हैं, तो यह महसूस होता है कि चीजें इस दिशा में आगे बढ़ रही हैं। आप देख सकते हैं कि ये दोनों लेखक जिस परिदृश्य को चित्रित करते हैं, उस तक चीजें कैसे आसानी से पहुंच सकती हैं।

और इसलिए, आप किताबें ढूँढते हैं, आप मंत्रालय, वेबसाइटें ढूँढते हैं, जो लगभग रहस्योद्घाटन की किताब से ग्रस्त हैं और इसे समझने की कोशिश कर रहे हैं और इसे 21 वीं सदी के सांचे में ढालने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, हम 21वीं सदी को देखते हैं और मध्य पूर्व और यूरोप और फिर संयुक्त राज्य अमेरिका में क्या चल रहा है, और फिर हम यह पूछने की कोशिश करते हैं कि यह रहस्योद्घाटन जैसी पुस्तक में हमने जो पढ़ा है, उससे कैसे मेल खाता है। फिर, यह पता लगाने की कोशिश लगभग एक जुनून जैसा है।

तो ये दो चरम सीमाएँ हैं जो 21वीं सदी में अद्वितीय नहीं हैं। वास्तव में, पुस्तक के लिखे जाने और ईसाई सिद्धांत में आने के कुछ समय बाद ही उन्होंने रहस्योद्घाटन की व्याख्याओं को चित्रित किया है। फिर से, या तो इसे अस्वीकार करना और इसके साथ क्या करना है इसके बारे में अनिश्चितता के कारण इसकी उपेक्षा करना, या, फिर से, इसके प्रति इतना जुनूनी और रोमांचित हो जाना कि कोई भी रहस्योद्घाटन की पुस्तक के अलावा और कुछ नहीं सोच सकता है और हमारे अपने दिन की घटनाएँ कैसी लगती हैं यह एक ऐसी स्क्रिप्ट के रूप में चल रहा है जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पहले से ही लिखी गई थी।

अब, मैं आपको जो सुझाव देने जा रहा हूँ, वह यह है कि अगर मैं पुस्तक के सामने अपने दृष्टिकोण के बारे में कुछ बता सकूँ, तो मेरी राय में, हमें सबसे पहले, रहस्योद्घाटन का इलाज करना होगा, और उम्मीद है कि मैं इसे प्रदर्शित करने में सक्षम होऊँगा, हमें रहस्योद्घाटन को नए नियम की किसी भी अन्य पुस्तक की तरह मानने की आवश्यकता है। अर्थात्, हमें मुख्य प्रश्न पूछने की आवश्यकता है कि लेखक दुनिया में क्या संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था, और लेखक संभवतः किस स्थिति को संबोधित कर रहा था? एक बात, उम्मीद है, आप समझ जाएंगे, यह उसी तरह है जैसे पॉल ने लिखा था, हालांकि अभी भी भगवान के लोगों के धर्मग्रंथ हैं जो भगवान को प्रकट करते हैं और आज भी हमसे बात करते हैं, उसी तरह जैसे पॉल ने किताब लिखी थी चर्च में एक बहुत ही विशिष्ट संकट और समस्या और एक बहुत ही विशिष्ट पाठक वर्ग के लिए गलातियों का रहस्योद्घाटन, मुझे लगता है, उसी तरह है। लेखक एक किताब लिख रहा है जो पहली शताब्दी की एक बहुत ही विशिष्ट समस्या और परिस्थितियों को संबोधित करती है।

और इसलिए, जिस तरह हम गैलाटियन के पीछे या 1 पीटर या किसी अन्य पुस्तक के पीछे क्या चल रहा था, उसे फिर से बनाने और समझने की कोशिश करते हैं ताकि हम आज इसे बेहतर ढंग से समझ सकें, मुझे लगता है कि हमें रहस्योद्घाटन के साथ भी वही काम करना होगा। मैं हमेशा हैरान हो जाता हूँ जब मैं कुछ ऐसे लोगों को सुनता हूँ जिन्हें बेहतर पता होना चाहिए कि वे नए नियम की सभी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, यानी, लेखक का इरादा क्या था, सबसे अधिक संभावना है कि उसका इरादा क्या था, पॉल या पीटर की मूल स्थिति और परिस्थितियाँ क्या थीं या जॉन या जो भी संबोधित कर रहा था, लेकिन फिर वे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक पहुँचते हैं और वे उसे पूरी तरह से त्याग देते हैं। वे प्रकाशितवाक्य को पहले से लिखी गई 21वीं सदी की एक स्क्रिप्ट के रूप में फिर से पढ़ने की कोशिश करने लगते हैं।

और इसलिए, हम एक तरह से सावधानी बरतते हैं और पूछना शुरू कर देते हैं कि हमारे समय में दुनिया में क्या चल रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि हम प्रकाशितवाक्य में जो पढ़ते हैं उससे मेल

खाता है। और हम यह प्रश्न पूछने में असफल रहते हैं कि यह पुस्तक क्यों लिखी गई होगी? पहली शताब्दी में किस समस्या का समाधान किया जा सकता था? जिस लेखक ने यह पुस्तक लिखी है और जिसके पास यह दृष्टिकोण है जो इस पुस्तक में दर्ज है, वह सबसे अधिक संभावना किस बात को संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था? इसलिए, मुझे लगता है कि यही हमारा शुरुआती बिंदु होना चाहिए। किसी भी अन्य न्यू टेस्टामेंट पुस्तक की तरह, इससे पहले कि हम यह सवाल पूछें कि यह पुस्तक मेरी स्थिति के बारे में कैसे बात करती है, और यह पुस्तक 21वीं सदी में कैसे प्रतिध्वनित होती है, हमें पहले यह पूछना होगा कि वे मूल परिस्थितियाँ क्या थीं जिनमें यह पुस्तक लिखी गई थी। वह कौन सी समस्या या मुद्दा था जिसका वह समाधान कर रहा था? इस पुस्तक को लिखने में लेखक क्या करने और हासिल करने का प्रयास कर रहा था? सबसे पहले, इसलिए मैं जो करना चाहता हूँ वह उस पृष्ठभूमि से संबंधित मुद्दों की एक श्रृंखला को संक्षेप में संबोधित करना है जिसने रहस्योद्घाटन को जन्म दिया।

यानी, जैसा कि हम अन्य पुस्तकों में करते हैं, एक परिदृश्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं, सबसे अधिक संभावना है कि क्या चल रहा था जिसके कारण जॉन ने बैठकर सबसे पहले इस पुस्तक को लिखा। सबसे पहले, जहां तक लेखक और तारीख का सवाल है, मैं उसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। यह विवाद से परे है कि जॉन नाम के किसी व्यक्ति ने यह पुस्तक लिखी है क्योंकि वह पहले अध्याय में खुद को जॉन, लेखक जॉन के रूप में पहचानता है।

समस्या यह है कि हम पहली शताब्दी में अनेक जॉनों के बारे में जानते हैं। वास्तव में, प्रारंभिक चर्च के साथ-साथ आधुनिक इंजील ईसाई विद्वान कभी-कभी इस बात पर विभाजित होते हैं कि यह जॉन वास्तव में कौन था। क्या यह वही जॉन है जो यीशु मसीह का प्रेरित था जिसने चौथा सुसमाचार और पहला दूसरा और तीसरा जॉन लिखा होगा? क्या यह वही जॉन है? यह एक प्रबल संभावना है और इसके पीछे एक मजबूत परंपरा है जो फिर बहुत पहले आती है।

लेकिन यह दिलचस्प है। जब आप पुस्तक को ध्यान से पढ़ते हैं, तो लेखक कभी भी एक प्रेरित के अधिकार का दावा नहीं करता है जैसा कि पॉल ने अपनी पुस्तक लिखने में किया था। और एक चीज़ जो हम देखने जा रहे हैं, रहस्योद्घाटन भी एक पत्र है।

यह सिर्फ यह भविष्यवाणी या जंगली दृष्टि नहीं है। रहस्योद्घाटन भी एक पत्र है जहां लेखक अपनी पहचान बताता है। लेकिन यह दिलचस्प है।

वह खुद को एक प्रेरित के रूप में नहीं पहचानता है और वह एक प्रेरित के अधिकार का दावा नहीं करता है जैसा कि पॉल अक्सर करता था। इसका मतलब यह नहीं है कि वह उनमें से एक नहीं है। लेकिन मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि लेखक पुराने नियम के भविष्यवक्ता के अधिकार का दावा करता है।

हमने पहले कहा है कि नए नियम के कई दस्तावेज़ लेखक की ओर से बिना किसी झुकाव के लिखे गए प्रतीत होते हैं कि वह धर्मग्रंथ लिख रहा था। पुनः, वापस जाएँ और ल्यूक 1, 1-4 पढ़ें। तुम्हें कोई संकेत नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक को न तो यह लगता है और न ही एहसास होता है कि वह धर्मग्रंथ लिख रहा है। वह सिर्फ ईसा मसीह के जीवन की एक कथा लिख रहा है क्योंकि उसे ऐसा करना उचित लगा। लेकिन रहस्योद्घाटन के साथ, मुझे यकीन है कि लेखक, जॉन, वह जो भी था, चाहे वह प्रेरित जॉन हो या कोई अन्य जॉन, प्रारंभिक चर्च में एक नेता, लेखक, मुझे लगता है कि उसने सोचा था कि वह धर्मग्रंथ लिख रहा था।

वह कुछ ऐसा लिख रहा था जो पुराने नियम से प्रतिस्पर्धा करता था या जिसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के समान अधिकार के स्तर पर लिया जाना था। इसलिए, मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन एक ऐसी पुस्तक है जहां लेखक ने सोचा था कि वह धर्मग्रंथ लिख रहा था। शायद उसने नहीं सोचा था, ठीक है, इसे नए नियम के सिद्धांत में शामिल किया जाएगा या शायद उसने नहीं सोचा था कि इसे पुराने नियम में शामिल किया जाएगा।

लेकिन स्पष्ट रूप से, उसे लगता है कि वह अधिकार के समान स्तर पर और पुराने नियम की भविष्यसूचक गवाही की पूर्ति और समापन के रूप में कुछ लिख रहा है। तो, यह जॉन जो भी है, चाहे, फिर से, यह प्रेरित जॉन हो या प्रारंभिक चर्च में कोई अन्य प्रसिद्ध जॉन हो, वह एक पुराने नियम के अधिकार के साथ एक पुस्तक लिख रहा है, न कि एक प्रेरित, पुराने नियम के भविष्यवक्ता के साथ। जब यह लिखा गया था, तो कई सुझाव थे, और मैं उन सभी पर विचार नहीं करना चाहता।

रहस्योद्घाटन की तारीख के लिए आज सबसे आम सुझाव यह है कि रहस्योद्घाटन पहली शताब्दी के अंतिम दशक के अंतिम भाग में किसी समय लिखा गया था। यह 95, 96 ईस्वी के आसपास है जब सम्राट डोमिनियन, यदि आप इस वर्ग के लिए अपने नोट्स के बिल्कुल अंत में जाते हैं, न्यू टेस्टामेंट नोटबुक, मेरे पास सम्राटों की एक सूची है। आप ऊपर स्क्रॉल कर सकते हैं, पहली सदी से शुरू करके दूसरी सदी तक।

यदि आप उस सूची को नीचे स्क्रॉल करते हैं, तो आप पाएंगे कि डोमिनियन का नाम फिर से राज कर रहा है, लगभग 95 से 96 ईस्वी संभवतः वह समय रहा होगा जब प्रकाशितवाक्य लिखा गया था। यह हमें नहीं बताता है, लेकिन फिर, दूसरी शताब्दी या उसके आसपास की कुछ प्रारंभिक चर्च गवाही है जो उस समय के दौरान रहस्योद्घाटन का पता लगाती है। पाठ में अन्य संकेत हैं कि यह निश्चित रूप से उस समय के दौरान शासन करने वाले रोमन सम्राट डोमिनियन के शासनकाल के बारे में हम जो जानते हैं, उससे मेल खाता है।

तो, सबसे अधिक संभावना है, रहस्योद्घाटन दावा कर सकता है, या तो रहस्योद्घाटन या जॉन का सुसमाचार या शायद 1 जॉन, उन तीन पुस्तकों में से एक, लिखी गई अंतिम नए नियम की पुस्तक होने का दावा कर सकती है। लेकिन रहस्योद्घाटन स्पष्ट रूप से, फिर से, पुराने नए नियम के अंत में आता है, इसके कालानुक्रमिक क्रम के कारण नहीं, बल्कि कई अन्य कारणों से, लेकिन शायद लिखी गई सबसे आखिरी किताब हो सकती है, लेकिन संभवतः 75, 76 ईस्वी में लिखी गई, पहली शताब्दी के अंत में जब रोम पर उस समय सम्राट डोमिशियन का शासन था। अब, जब आप सोचते हैं, तो इससे पहले कि हम इसकी पृष्ठभूमि से संबंधित कुछ मुद्दों पर नज़र डालें, इसकी पृष्ठभूमि से संबंधित एक चीज़ इसके साहित्यिक प्रकार से अधिक संबंधित है,

लेकिन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक इसकी प्रतीकात्मकता है।

रिवीलेशन एक ऐसी किताब है जिसे बहुत ही अनोखे और ग्राफिक प्रतीकवाद के साथ पेश किया गया है। आपके पास सात सिर वाले ड्रेगन और जानवर हैं जो प्रकाशितवाक्य के दूरदर्शी परिदृश्य के चारों ओर दौड़ रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा, तुम्हारे पास टिड्डियाँ हैं जिनके सिर मनुष्य जैसे हैं, बाल स्त्री जैसे हैं, दाँत शेर जैसे हैं, और उनके सिर पर सोने के मुकुट हैं, लेकिन पूँछ बिच्छुओं जैसी है।

और जब वे उड़ते हैं तो तेज़ हवा जैसी आवाज़ आती है। मेरा मतलब है, दुनिया में वह क्या है? तो, यह सभी प्रकार के रंगों से भरा है। यह सभी प्रकार की संख्याओं और मापों से परिपूर्ण है।

जहां तक इसकी दूरदर्शी गुणवत्ता का सवाल है तो यह आंखों के लिए एक तरह से दावत जैसा है। हम इस बारे में अधिक बात करेंगे कि हम इसे कैसे समझते हैं, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि रहस्योद्घाटन की सबसे विशिष्ट विशेषता इसका प्रतीकवाद है, जिसका अर्थ है कि जब हम रहस्योद्घाटन की व्याख्या करते हैं, तो हम इसकी सख्त शाब्दिक व्याख्या नहीं करेंगे, जैसा कि हम अन्य प्रकार के साहित्य से कर सकते हैं। . इसके बजाय, हम इसके प्रतीकात्मक मूल्य का सम्मान करेंगे, और हम पूछेंगे कि हम इन प्रतीकों को कैसे समझते हैं? वे क्या संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं? उनकी केवल इस तरह व्याख्या करने के बजाय जैसे हम कोई वैज्ञानिक सूत्र या खोज या कोई समाचार रिपोर्ट या ऐसा ही कुछ करेंगे।

तो, रहस्योद्घाटन की सबसे विशिष्ट विशेषता इसकी प्रतीकात्मकता है। अब, यह हमें इस सवाल पर लाता है कि जॉन इस तरह की किताब क्यों लिखेंगे? याद रखने वाली पहली बात यह है कि क्या रहस्योद्घाटन को पहली शताब्दी के अंत में रखना सही है, यह उन चीजों में से एक है, और इस तरह की बात इस कक्षा के पहले सप्ताह या उसके आस-पास तक जाती है, हम इस तथ्य के बारे में काफी बात करते हैं इस दौरान राजनीतिक और धार्मिक रूप से, रोम ने मूल रूप से हर चीज़ पर शासन किया। रोम उस समय का प्रमुख साम्राज्य और महाशक्ति था।

इसके अलावा, विशेष रूप से पहली शताब्दी के अंत में, जबकि ईसाइयों के सम्राट-व्यापी या आधिकारिक तौर पर स्वीकृत उत्पीड़न जैसा कुछ भी नहीं था, निश्चित रूप से रोमन प्रभुत्व और शाही शासन का एक संदर्भ था जो अक्सर ईसाइयों के लिए रहने के लिए असहज बना देता था। विशेष रूप से सम्राट पूजा की वृद्धि और प्रमुखता के साथ। वस्तुतः हर जगह आप ग्रीको-रोमन शहर में गए, चाहे वह रोम में हो या एशिया माइनर में या यहां तक कि ग्रीस में, आपने न केवल विभिन्न देवताओं को समर्पित मंदिर देखे होंगे, बल्कि यह आम होता जा रहा था, हालांकि शुरुआत में, यह था आम तौर पर केवल मृत सम्राट की पूजा करना या उन्हें मंदिर समर्पित करना ही स्वीकार्य है, लेकिन जीवित सम्राटों को देवता बनाना और मंदिर स्थापित करना आम होता जा रहा है।

उदाहरण के लिए, इफिसस शहर, उन शहरों में से एक जहां रहस्योद्घाटन को संबोधित किया गया था, में सम्राट डोमिनियन के सम्मान में एक मंदिर बनाया गया था। एशिया माइनर,

आधुनिक तुर्की और अन्य जगहों के अधिकांश प्रमुख शहरों में, बुतपरस्त देवताओं को समर्पित मंदिरों के साथ-साथ, सम्राटों को समर्पित मंदिर भी रहे होंगे। कभी-कभी, सम्राट स्वयं इन मंदिरों के निर्माण की मंजूरी दे देता था, लेकिन अक्सर, सम्राट का वास्तव में उनसे कोई लेना-देना नहीं होता था।

यह शहर के स्थानीय अधिकारी, धनी व्यक्ति अधिक थे, जो रोम के प्रति अपनी कृतज्ञता और अपनी वफादारी दिखाना चाहते थे। वे सम्राट के सम्मान में इन मंदिरों की स्थापना करेंगे। और तब यह उम्मीद की जाती थी कि आप कुछ खास आयोजनों में या कुछ खास मौकों पर हिस्सा लेंगे, आप अपना आभार और अपना सम्मान दिखाने के लिए कुछ खास मौकों पर हिस्सा लेंगे और यहां तक कि सम्राट और रोम की पूजा भी करेंगे, उन्हें यह दिखाने के लिए कि सब कुछ आपका है, आपकी भलाई है, आपकी शारीरिक खुशहाली, आध्यात्मिक खुशहाली, वह सब कुछ जिसके लिए आप रोमन साम्राज्य के प्रति कृतज्ञता के ऋणी हैं।

और इसलिए, इसे व्यक्त करने के कई अवसर थे। यहां तक कि पहली शताब्दी के शहरों में भी, मूर्तियों और मंदिरों, उत्कीर्णन और अन्य प्रकार के दृश्य अनुस्मारक, यहां तक कि सिक्के पर भी, सम्राट के महत्व और रोम द्वारा किए गए सभी कार्यों की याद दिलाते होंगे। आपके लिए। और कृतज्ञता दिखाने में असफल होना, सम्राट और रोम के प्रति वफादारी और निष्ठा दिखाने में असफल होना अत्यधिक अनादर और विश्वासघात का संकेत माना जाता।

अब, यह अक्सर है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अक्सर उत्पीड़न से जुड़ी होती है। अर्थात्, हम अक्सर रहस्योद्घाटन को उन ईसाइयों के लिए सांत्वना के स्रोत के रूप में देखते हैं जिन्हें सताया जा रहा है। फिर भी, जब आप पुस्तक को ध्यान से पढ़ते हैं, और सबसे अधिक, तो मैं वापस आकर कहता हूं, कि प्रकाशितवाक्य के पाठकों के बारे में हमारे पास जो भी जानकारी है, वह अध्याय 2 और 3 से आती है। सात चर्चों को ये सात पत्र या सात संदेश एशिया माइनर या आधुनिक तुर्की।

और उनमें से कुछ को आप पहचानते हैं। उनमें से एक है पेरगामम। पेरगामम के खोए हुए पत्र याद हैं? दूसरा इफिसुस है।

लेकिन ऐसे कई पत्र हैं जो एशिया माइनर के चर्चों को संबोधित हैं। और यहीं से हमें बहुत सारी जानकारी मिलती है। जब आप उन पत्रों को पढ़ते हैं, तो कुछ दिलचस्प बात सामने आती है।

उन सात पत्रों में से केवल दो या उन चर्चों में से दो पत्र उन चर्चों को संबोधित हैं जो किसी भी प्रकार का उत्पीड़न या उत्पीड़न झेल रहे हैं। फिर से याद रखें, मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूंगा कि डोमिनिशियन ईसाइयों को खत्म करने की खोज में नहीं है। ईसाइयों को नष्ट करने के लिए कोई आधिकारिक तौर पर स्वीकृत सम्राट-व्यापी प्रयास नहीं है।

अधिकांश उत्पीड़न स्थानीय स्तर पर हुआ। यह जरूरी नहीं कि डोमिनिशियन ही ऐसा कर रहा था। अधिकांश उत्पीड़न, दुर्व्यवहार और उत्पीड़न स्थानीय स्तर पर उन अधिकारियों की ओर से हुआ होगा जो यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि ईसाई और सभी लोग रोम के प्रति उचित सम्मान और वफादारी दिखाएं।

तो, जो दिलचस्प है वह यह है कि जब आप उन सात पत्रों को पढ़ते हैं जो हमें पाठकों के बारे में हमारे द्वारा ज्ञात अधिकांश जानकारी बताते हैं, तो उन सात चर्चों में से केवल दो ही किसी प्रकार के दुर्व्यवहार और उत्पीड़न से पीड़ित थे। अन्य पाँच में मुख्य समस्या यह है कि एशिया माइनर के शहर, उन सात शहरों में से एशिया माइनर के उन शहरों में रहने वाले अधिकांश ईसाई अधिक प्रलोभित थे, मुख्य समस्या रोमन शासन या शाही शासन से समझौता करना था। अर्थात्, उन्होंने सोचा कि कोई एक ही समय में सीज़र की पूजा और यीशु मसीह की पूजा कर सकता है।

तो, ऐसा प्रतीत होता है कि रहस्योद्घाटन के पीछे मुख्य समस्या उत्पीड़न नहीं है, हालाँकि कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें सताया जा रहा है, और एक व्यक्ति जिसका नाम एंटीपास है, क्या आपको वह नाम याद है? लॉस्ट लेटर्स ऑफ़ पेर्गमम में काल्पनिक पात्रों में से एक। वास्तव में, एंटीपास नाम के एक व्यक्ति की जान चली गई है। लेकिन आपके पास अभी तक ईसाइयों को सड़कों पर घसीटे जाने, सिर काटने और मौत की सजा देने और इस तरह की चीजों का व्यापक पैमाने पर उत्पीड़न नहीं हुआ है।

ऐसा बिलकुल नहीं हो रहा है। लेकिन फिर भी, अधिकांश उत्पीड़न उत्पीड़न के रूप में स्थानीय स्तर पर अधिक होता है, और एक व्यक्ति, वास्तव में, अपने विश्वास के लिए मर गया है, इस व्यक्ति का नाम पेरगाम में एंटीपास है। लेकिन अन्यथा, एशिया माइनर के शहरों में मुख्य समस्या यह है कि, ये सभी शहर रोमन शासन से प्रभावित थे।

आप कहीं भी नहीं जा सकते थे और रोमन शासन के लंबे हाथों से बच नहीं सकते थे। और फिर, इनमें से अधिकांश, प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में इन सभी सात शहरों में, उनमें से लगभग में रोमन सम्राट के सम्मान में एक मंदिर बनाया गया होगा और यह अपेक्षित या अपेक्षा की गई होगी कि लोग शाही रोम के प्रति अपनी वफादारी दिखाएंगे और यहां तक कि उसकी पूजा भी करेंगे। रोम द्वारा किए गए सभी कार्यों, रोम द्वारा किए गए सभी आशीर्वादों के लिए कृतज्ञता के संकेत के रूप में। रोम और सम्राट को विश्व के उद्धारकर्ता के रूप में देखा जाता था।

रोम ने उन लोगों के लिए सच्ची शांति और कल्याण की पेशकश की जो उसके शासन में आते थे और जो उसके शासन के अधीन थे। और इसलिए, आप देख सकते हैं कि क्यों कई ईसाई समझौता करने को तैयार थे। उन्होंने सोचा, क्या हम यीशु मसीह के प्रति वफादार रह सकते हैं लेकिन फिर भी रोम के प्रति वफादार रह सकते हैं? क्या हम यीशु मसीह की पूजा करते हुए भी सीज़र की पूजा कर सकते हैं? और कुछ ईसाई कह रहे थे, हाँ, हम कर सकते हैं।

तो, दुर्दशा क्या थी? इसके आलोक में ईसाइयों की क्या दुर्दशा थी? ईसाइयों की दुर्दशा दोहरी थी। नंबर एक उनमें से कुछ हैं, उनमें से कुछ वास्तव में यीशु मसीह के लिए गवाही देने के कारण, सीज़र की पूजा करने और अकेले मसीह की पूजा करने से इनकार करने के कारण उत्पीड़न और उत्पीड़न सह रहे थे। लेकिन दूसरा, अन्य लोग समझौता करने में रुचि रखते थे या इच्छुक थे।

और फिर, रहस्योद्घाटन के पीछे यही मुख्य समस्या प्रतीत होती है। यह जिस प्राथमिक समस्या का समाधान करता है वह उत्पीड़न नहीं है। प्रकाशितवाक्य में बताई गई प्राथमिक समस्या शाही रोमन शासन के संदर्भ में इन शहरों में रहने वाले ईसाइयों के बीच शालीनता और समझौता है।

ऐसा है, आपने यह स्लाइड पहले भी देखी है, मुझे लगता है इससे भी पहले। यह इफिसस में डोमिनिशियन के मंदिर का अवशेष है। और फिर, अधिकांश शहरों में अन्य बुतपरस्त मंदिरों के साथ-साथ बुतपरस्त देवताओं के लिए सम्राट के सम्मान में मंदिर बनाए गए होंगे।

ये तो आपने भी देखा होगा. यह महज़ पॉल की मिशनरी यात्राओं का एक नक्शा है। लेकिन शहर, स्मिर्ना उल्लिखित शहरों में से एक है।

जॉन जिन शहरों को संबोधित कर रहे हैं जिनके बारे में प्रकाशितवाक्य लिखा गया है, वे पश्चिमी एशिया माइनर में स्थित हैं, जो फिर से, रोमन शासन और शाही और सम्राट पूजा का केंद्र था। तो, रहस्योद्घाटन का प्रमुख विषय क्या है? यह उत्पीड़न नहीं तो क्या है? मूल रूप से, जॉन जो करने की कोशिश करने जा रहा है वह अपने पाठकों को यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए मनाने की कोशिश करना है, चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, यीशु मसीह का पालन करना है। यह प्रदर्शित करके कि केवल यीशु मसीह ही उनकी पूजा के योग्य हैं, भले ही इसके लिए लोगों को कष्ट सहना पड़े।

तो, बार-बार, इन सभी उत्तेजक दृश्यों और अजीब प्रतीकों में, जो कुछ भी हम उनसे बनाते हैं, जॉन के संदेश के केंद्र में उनके पाठकों को यह समझाने का प्रयास है कि केवल यीशु मसीह ही पूजा के योग्य हैं, भले ही इसके लिए उन्हें कष्ट सहना पड़े। और उन्हें बुतपरस्त रोमन साम्राज्य के प्रति अपनी निष्ठा और पूजा दिखाने के प्रलोभन का विरोध करने के लिए प्रेरित करना, जिसका अनुसरण करने के लिए उनमें से कई लोग प्रलोभित हैं। लेकिन साथ ही, उन लोगों को प्रोत्साहित करना जो विरोध कर रहे हैं, उन्हें यीशु मसीह के प्रति वफादार गवाही देकर ऐसा करना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो।

तो, इसका मतलब यह है कि प्रकाशितवाक्य का मुख्य विषय अंत समय नहीं है। यह मुख्यतः अंत समय के बारे में नहीं है। यह मुख्य रूप से पहली सदी के पाठकों के बारे में है जो उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि अगर वे रोम के साथ अपना भाग्य आजमाते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है।

यदि वे रोम, इस बुतपरस्त साम्राज्य में अपना विश्वास और विश्वास और अपनी पूजा और निष्ठा रखते हैं, तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है। लेकिन इसके बजाय, उन्हें यीशु मसीह को गले लगाना चाहिए। उन्हें आज्ञाकारिता में यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए, चाहे इसके लिए कुछ भी कीमत चुकानी पड़े, चाहे ऐसा करने में उन्हें कितना भी कष्ट उठाना पड़े।

और कुछ लोग पहले ही पीड़ित हो चुके हैं और जॉन आने वाले समय में और अधिक कष्ट सहने की कल्पना करता है। इसलिए, रहस्योद्घाटन एक प्रोत्साहन और उससे भी अधिक एक चेतावनी है। अब, रहस्योद्घाटन किस प्रकार की पुस्तक है? फिर से, हमने इस बारे में बात की है

इसलिए मैं बस वही दोहराना चाहता हूँ जो हमने पहले सेमेस्टर में कहा था जब हमने न्यू टेस्टामेंट में साहित्यिक शैलियों के बारे में बात की थी।

रहस्योद्घाटन वास्तव में एक प्रकार का अनोखा संकर रूप है। इसमें वास्तव में तीन अलग-अलग बिल्कुल विशिष्ट साहित्यिक प्रकारों को एक पुस्तक में मिश्रित किया गया है। और मैं उनमें से दो पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ।

उनमें से एक यह है कि रहस्योद्घाटन स्पष्ट रूप से सर्वनाश के रूप में जाना जाता है या कम से कम हम इसे सर्वनाश कहते हैं। उन्होंने आवश्यक रूप से पहली सदी में प्रकाशितवाक्य को सर्वनाश नहीं कहा होगा। यह एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग हमने इस प्रकार के साहित्य को निर्दिष्ट करने के लिए किया है।

सर्वनाश क्या है, कम से कम हमने इसे जो शीर्षक दिया है, सर्वनाश क्या है, यह मूल रूप से किसी के दूरदर्शी अनुभव का प्रथम-व्यक्ति वर्णन है। और होता यह है कि किसी के पास एक दृष्टिकोण होता है और अब वे उसे पाठकों के लाभ के लिए लिख देते हैं। एक तरह से, वे उस दृष्टि को दोबारा अनुभव कर सकते हैं जो उस व्यक्ति के पास थी।

तो यही कारण है कि वह इस सभी ग्राफिक, अजीब कल्पना में संचार करता है। वह चाहता है कि उसके पाठक उस दृश्य को उसी तरह महसूस करें और अनुभव करें जैसे लेखक ने तब किया था जब उसके पास स्वयं वह दृश्य था। तो, लेखक को अपना दृष्टिकोण ईश्वर द्वारा बताया गया है और अब वह उस दृष्टिकोण को लिखता है।

एक सर्वनाश जो करता है वह मूल रूप से एक सर्वनाश है, एक सर्वनाश जो मुख्य चीज करता है वह भविष्य की इतनी भविष्यवाणी नहीं करता है, हालांकि यह आंशिक रूप से ऐसा करता है, लेकिन यह पाठकों को उनकी वर्तमान स्थिति को समझने और समझाने में मदद करने का एक प्रयास है। और मैं हमेशा इसका वर्णन इसी प्रकार करता हूँ। सर्वनाश इसी तरह काम करता है।

यदि आप जाते हैं और कोई नाटक देखते हैं, तो आप केवल वही देखते हैं जो मंच पर चल रहा है। आप सभी अभिनेताओं को एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हुए देखते हैं और आप नाटक में विभिन्न दृश्यों और विभिन्न गतिविधियों को देखते हैं और आप संवाद सुनते हैं और फिर एक बार यह खत्म हो जाता है, तो यह हो जाता है। हालांकि, जैसा कि आप जानते हैं, पारंपरिक मंच सेटिंग में, नाटक के पीछे एक बड़ा पर्दा होता है और यदि आप उस पर्दे को उठाते हैं, तो आप देखेंगे कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक है।

वहां एक निर्देशक है, पोशाक डिजाइनर हैं और वे लोग हैं जो लोगों को पोशाक से पोशाक बदलने में मदद करते हैं, और सेट पर काम करने वाले लोग हैं जो विभिन्न सेटों को हटाते और लगाते हैं। पर्दे के पीछे हर तरह की चीजें चल रही होती हैं जो नाटक को वैसा ही बनाती हैं जैसा आप अपनी दृश्य आंखों से देखते हैं, हालांकि जरूरी नहीं कि आप पर्दे के पीछे देखें। यही तो सर्वनाश है।

एक सर्वनाश का अनावरण होता है, यह पर्दा उठाता है ताकि आप पर्दे के पीछे देख सकें कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक कुछ है। अब, आइए इसे पहले ईसाइयों के संदर्भ में रखें। चूँकि आपके पास एशिया माइनर में रहने वाले ईसाई हैं, इसलिए मैं संक्षेप में इस मानचित्र पर वापस जाऊँगा, क्योंकि आपके पास एशिया माइनर में रहने वाले ईसाई हैं और रोम हर चीज़ पर शासन करता है, वे बस यही देखते हैं।

दुनिया के अपने अनुभवजन्य दृष्टिकोण से, वे देखते हैं कि रोमन साम्राज्य सभी चीज़ों पर शासन कर रहा है और दुनिया पर नियंत्रण रखता है। और वे केवल शाही शासन के ये सभी लक्षण देखते हैं और उन पर रोमन साम्राज्य के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने, यहाँ तक कि पूजा करने का दबाव भी दिखता है। सर्वनाश के रूप में रहस्योद्घाटन क्या करता है, और सर्वनाश शब्द का अर्थ है प्रकट करना या अनावरण करना, यह क्या करता है, कि यह पर्दा उठाता है ताकि वे अपनी पहली सदी की दुनिया के मंच के पीछे देख सकें कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक है।

मैं जो देख रहा हूँ उसके पीछे एक संपूर्ण स्वर्गीय दुनिया और एक भविष्य छिपा है जिसकी ओर इतिहास बढ़ रहा है। और ऐसा देखने के बाद, अब वे अपनी दुनिया को एक नई रोशनी में देख पा रहे हैं। तो अब, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 4-5 में, जॉन स्वर्ग का एक दर्शन देखता है जिसमें परमेश्वर और यीशु मसीह सिंहासन पर बैठे हैं और पूरी सृष्टि उनकी संप्रभुता को स्वीकार कर रही है।

यह देखने के बाद, जॉन वापस जा सकता है और अपनी दुनिया को देख सकता है और कह सकता है, इसमें बस इतना ही नहीं है। यह एक तरह से भ्रामक है। हाँ, रोम दृश्य रूप से शासन करता है, अनुभवजन्य रूप से, मैं रोमन शासन देखता हूँ, लेकिन अब मुझे एक ऐसा दर्शन मिला है जहाँ मुझे पता है कि पर्दे के पीछे जो जरूरी नहीं कि दृश्यमान आंखों के लिए बोधगम्य हो, भगवान और यीशु मसीह वास्तव में सिंहासन पर बैठे हैं और संपूर्ण शासन कर रहे हैं कास्मोस \ ब्रह्मांड।

और अंत में, एक लक्ष्य है जिसकी ओर मेरा अस्तित्व बढ़ रहा है, और वह एक नई रचना है जहाँ भगवान और मेम्ना और भगवान के लोग शासन करेंगे और सर्वोच्च शासन करेंगे। तो उस ज्ञान के साथ, अब जॉन अपने पहली सदी के अस्तित्व और स्थिति को बिल्कुल नई रोशनी में देख सकता है। हाँ, रोम वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए था।

सीज़र अंतिम प्राधिकारी नहीं है। और हमें रोमन शासन का विरोध करने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। पूजा करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि सच्चा राजा अपने सिंहासन पर, अपने स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है।

तो रहस्योद्घाटन यही करता है। फिर, मुझे इसकी तुलना पहली सदी के एशिया माइनर के मंच से करना उपयोगी लगता है जिसे जॉन देखता है। लेकिन जब रहस्योद्घाटन होता है, जब उसके पास यह दृष्टि होती है, तो यह पर्दा उठा देता है ताकि वह अपनी पहली सदी के पीछे और उससे आगे देख सके और देख सके कि एक बहुत बड़ी तस्वीर है।

रोम ही सब कुछ नहीं है। एशिया माइनर में मैं अपनी भौतिक आंखों से जो देखता हूँ वह पूरी कहानी नहीं है। वहाँ एक संपूर्ण स्वर्गीय संसार है जिसमें परमेश्वर अपने सिंहासन पर बैठा है और एक भविष्य है जिसकी ओर चीज़ें बढ़ रही हैं।

अब इसके साथ, उस नए दृष्टिकोण से लैस, जॉन अब अपने पाठकों को स्थिति में रहने और उचित प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। तो सर्वनाश कुछ इसी तरह होता है। दूसरा, आगे बढ़ने के लिए, रहस्योद्घाटन का दूसरा साहित्यिक रूप, जिसे हम शायद अनदेखा कर देते हैं लेकिन रहस्योद्घाटन इसमें भाग लेता है वह एक पत्र का रूप है।

रहस्योद्घाटन पॉल के पत्रों में से एक की तरह ही समाप्त होता है, शुरू होता है और समाप्त होता है। यह कितना महत्वपूर्ण है, उसी तरह से, मुझे खेद है, उसी तरह से पॉल के पत्र, उदाहरण के लिए, गैलाटियन, बहुत विशिष्ट समस्याओं को संबोधित कर रहे थे, इसलिए रहस्योद्घाटन एक बहुत ही विशिष्ट मुद्दे को संबोधित कर रहा है। और जिस तरह से पॉल अपने पाठकों को ऐसी जानकारी के साथ संबोधित कर रहा था जिसे वे समझ सकते थे और उनके संकट का सामना करेंगे और जवाब देंगे, उसी तरह, मैं यह मानता हूँ कि रहस्योद्घाटन एक संदेश संचारित कर रहा है जिसे पहली शताब्दी के लोगों ने समझा होगा पाठक।

फिर, यह एक पत्र है। यह एक बहुत ही विशिष्ट समस्या को संबोधित है और चर्च को उनकी समस्या और स्थिति को एक नई रोशनी में देखने की जरूरत है और रहस्योद्घाटन यह प्रदान करता है। तो फिर, हम अक्सर इस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, ओह, यह एक भविष्यवाणी है, यह एक सर्वनाश है, लेकिन हम अक्सर भूल जाते हैं कि यह एक पत्र भी है।

और इसलिए, जॉन एक पत्र के रूप का उपयोग करता है क्योंकि यह अपने पाठकों को तुरंत संबोधित करने और उनकी विशिष्ट स्थिति को इस तरह से संबोधित करने का सबसे अच्छा तरीका है जिससे वे समझ सकें। इसलिए, रहस्योद्घाटन में ऐसी जानकारी होनी चाहिए जिसे पाठक समझ सकें और समझ सकें जो उनकी समस्याओं का समाधान करेगी, उन्हें उस संकट का जवाब देने में मदद करेगी जिसका वे सामना कर रहे हैं, जो कि रोमन शासन और सम्राट पूजा है। ठीक है, तो इसके प्रकाश में, मुझे रहस्योद्घाटन की व्याख्या कैसे करनी चाहिए? सबसे पहले, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, रहस्योद्घाटन प्रतीकात्मक है और शाब्दिक नहीं है।

मैं एक ऐसे चर्च में पला-बढ़ा हूँ जहाँ कहा जाता था कि आपको प्रकाशितवाक्य की शाब्दिक व्याख्या करने की आवश्यकता है और केवल प्रतीकात्मक रूप से इसकी व्याख्या करें यदि कुछ और काम नहीं करता है। मैं इसे उल्टा कर दूँगा और कहूँगा कि आपको रहस्योद्घाटन में हर चीज़ की प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करनी चाहिए जब तक कि वास्तव में ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो। क्योंकि रहस्योद्घाटन एक सर्वनाश है।

यह भविष्य में स्वर्ग का अनावरण करता है, लेकिन यह अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में करता है। शायद प्रतीकात्मक भाषा उस जानकारी के लिए उपयुक्त है जिसे केवल मानवीय इंद्रियों द्वारा नहीं समझा जा सकता है, लेकिन अब एक रहस्यमय प्रकार की भाषा की आवश्यकता है, एक प्रतीकात्मकता जिसका उद्देश्य आपको जॉन के रहस्योद्घाटन के अर्थ को न केवल संज्ञानात्मक

रूप से समझना है बल्कि इसे महसूस करना है। भी। दूसरे शब्दों में, जब जॉन यह पत्र लिखता है तो वह सिर्फ आपके दिमाग का ही नहीं, बल्कि आपकी भावनाओं का भी ध्यान रखता है।

इसलिए, मेरी राय में, जब हम प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं, तो हमें इसकी प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करनी चाहिए। रहस्योद्घाटन मध्य पूर्व या दुनिया में कहीं भी क्या चल रहा है, इस पर प्रसारित सीएनएन समाचार देखने जैसा नहीं है। यह एक आर्ट गैलरी में घूमने और विभिन्न घटनाओं के विभिन्न प्रतीकात्मक चित्रणों को देखने जैसा है, विभिन्न घटनाओं के कलात्मक, दूरदर्शी चित्रणों की एक श्रृंखला, जो पूरी किताब में जॉन की आंखों के सामने घूमती है।

तो, इसका मतलब यह है कि इसे पढ़ना महत्वपूर्ण है, यह कहना नहीं कि, अच्छा, इसका क्या मतलब है? इसका तात्पर्य क्या है और यह कैसे पूरा होगा? लेकिन कभी-कभी इसे पढ़ने के लिए बस एक तरह से बात समझनी होती है और महसूस करना होता है, इसका जवाब देना होता है, न केवल मानसिक रूप से, बल्कि भावनात्मक रूप से भी जॉन के दृष्टिकोण के प्रति। दूसरा, प्रकाशितवाक्य का अर्थ, हालाँकि, हम रहस्योद्घाटन में प्रतीकों, अध्यायों और विभिन्न दर्शनों की व्याख्या करते हैं, पुस्तक का अर्थ कुछ ऐसा होना चाहिए जो जॉन का इरादा था और उसके पाठकों ने समझा होगा। याद रखें, रहस्योद्घाटन एक पत्र है।

दूसरे शब्दों में, रहस्योद्घाटन को ऐसे नहीं समझा जाना चाहिए जैसे कि जॉन बैठा है और एक क्रिस्टल बॉल को देखता है और भविष्य देखता है और अब वह वापस आता है। वह बैठ जाता है और एक क्रिस्टल बॉल में देखता है और 21वीं सदी को प्रकट होता हुआ देखता है और अब वह वापस जाता है और अपने पाठकों को यह समझाने की कोशिश करता है। नहीं।

एक पत्र के रूप में रहस्योद्घाटन, रहस्योद्घाटन एक लेखक द्वारा पहली सदी के पाठकों को उनकी ज़रूरतों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था, जिसे वे समझ सकते थे। तो इसका मतलब यह है कि रहस्योद्घाटन की कोई भी व्याख्या जिसे जॉन ने संभवतः इरादा नहीं किया होगा और उसके पहली शताब्दी के पाठकों को कभी भी समझ में नहीं आया होगा उसे संभवतः अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। तो फिर, जब मैं लोगों को इस बारे में बात करते हुए सुनता हूँ, ठीक है, यह परमाणु युद्ध को संदर्भित करता है या यह ओसामा बिन लादेन को संदर्भित करता है या यह कंप्यूटर या बारकोड को संदर्भित करता है, फिर से, अपने आप से पूछें, क्या जॉन वास्तव में ऐसा इरादा कर सकता था? और क्या उसके पाठक कभी यह बात समझ पाए होंगे? यदि उत्तर नहीं है, तो आपके मन में लाल झंडे उठने चाहिए।

याद रखें, हमें रहस्योद्घाटन की व्याख्या वैसे ही करने की ज़रूरत है जैसे हम नए नियम की किसी अन्य पुस्तक की करते हैं। सबसे पहले, यह पूछकर कि पहली शताब्दी के सन्दर्भ में इस पुस्तक का संभवतः क्या अर्थ था? पहली सदी के एशिया माइनर में रहने वाले लेखक जॉन क्या थे, वह पहली सदी के एशिया माइनर में रहने वाले अपने पाठकों से क्या संवाद करने की कोशिश कर रहे थे, पहली सदी के पूर्व-तकनीकी एशिया माइनर में जहां कंप्यूटर और थर्मोन्यूक्लियर हथियार और हेलीकॉप्टर नहीं थे और वे सभी अन्य चीजें? हाँ, सवाल यह है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बारे में क्या, जो कभी-कभी जितना जानते थे उससे कहीं बेहतर भविष्यवाणी करते प्रतीत होते थे? हाँ, मेरा मतलब है, मैंने अभी जो कुछ कहा है उसे मैं यह कह कर संयमित

करूंगा कि इसका मतलब यह नहीं है कि जॉन सब कुछ समझता था, सब कुछ कैसे पूरा होगा, और सब कुछ कैसे समाप्त होगा, लेकिन इसका मतलब यह है कि अगर वह यह नहीं जानता था, तो न ही क्या हम। दूसरी बात यह है कि, जॉन वास्तव में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को उलट देता है, विशेषकर डैनियल जो करता है।

डैनियल की पुस्तक के अंत में, डैनियल की ओल्ड टेस्टामेंट पुस्तक, जो कि प्रकाशितवाक्य के समान पुस्तक है, वास्तव में, रहस्योद्घाटन डैनियल पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है। डैनियल की पुस्तक के अंत में, डैनियल द्वारा इन सभी दृश्यों को देखने के बाद, उसे एक स्वर्गदूत ने इस पुस्तक की सामग्री को सील करने के लिए कहा क्योंकि यह बाद के समय के लिए है। जब आप रहस्योद्घाटन के अंत तक पहुंचते हैं, तो जॉन को एक स्वर्गदूत द्वारा बताया जाता है, भविष्यवाणी के शब्दों को सील न करें क्योंकि अब समय आ गया है।

दूसरे शब्दों में, यह पाठकों के दिन में पहले से ही पूरा हो रहा है। मसीह के आगमन के साथ, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने जो अनुमान लगाया था और भविष्यवाणी की थी वह अब पूरा हो रहा था इसलिए जॉन से कहा गया है, इसे सील मत करो। यह बाद की पीढ़ी के लिए नहीं है।

यह अभी के लिए है। यह आपके पहली सदी के पाठकों के लिए है। तो, हां, जॉन ने शायद सभी निहितार्थों को नहीं समझा होगा और यह भी नहीं समझा होगा कि सब कुछ कैसे पूरा होगा और पूरा होगा, लेकिन अगर उसने नहीं समझा, तो हम भी नहीं समझते हैं।

लेकिन जब वह समझता है, जब वह उन घटनाओं का भी वर्णन करता है जिनका वह पूरा महत्व नहीं समझता है, जब वह उनका वर्णन करता है, तब भी वह उस भाषा का उपयोग करता है जिससे उसके पाठक परिचित हैं। वह टैकों और हेलीकॉप्टरों तथा 21वीं सदी की चीजों का वर्णन नहीं कर रहे हैं। वह ऐसी भाषा और छवियों का उपयोग कर रहा है जो उसके पहली शताब्दी के संदर्भ और पुराने नियम से आती हैं।

तीसरा, पेड़ों के लिए जंगल से नज़र न हटाएँ। सभी विवरणों और हर चीज़ का तात्पर्य क्या है, यह जानने की कोशिश में इतना न उलझें कि आप मुख्य संदेश से चूक गए। रहस्योद्घाटन में ईसाई विश्वास के लगभग हर क्षेत्र के बारे में बहुत कुछ कहा गया है।

इसमें इस बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है कि मसीह कौन है, भगवान कौन है, यीशु मसीह पर भरोसा करने का क्या मतलब है, और आज्ञाकारिता में उसका अनुसरण करने का क्या मतलब है। इसमें आराधना, विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा मुक्ति और यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता और शिष्यत्व का जीवन जीने का क्या अर्थ है, के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है। फिर भी हम यह भूल जाते हैं कि जब हम रहस्योद्घाटन को एक कोड की तरह मानने की कोशिश करते हैं, जहां हम कहते हैं, 21वीं सदी में इसका क्या मतलब है? और हम इन सभी विस्तृत पत्राचारों को देखते हैं और उनका चित्रण करते हैं।

इसलिए सभी अलग-अलग पेड़ों और जंगल की जांच करने में इतने व्यस्त मत हो जाइए, यह दृष्टि का छोटा सा विवरण है कि आप यह नहीं देख पाएंगे कि पूरा जंगल कैसा दिखता है। और रहस्योद्घाटन के सभी दर्शन कुछ महत्वपूर्ण बातें संप्रेषित करते हैं, फिर भी यदि हम सभी

विवरणों के प्रति अत्यधिक जुनूनी और चिंतित हो जाते हैं तो हम उससे चूक जाते हैं। उससे संबंधित, प्रकाशितवाक्य के मुख्य उद्देश्य को न चूकें, और वह है पवित्र जीवन जीने का उपदेश।

रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करने के बारे में नहीं है। यह पाठकों को पवित्र जीवन और यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है। भले ही इसके लिए उन्हें कष्ट सहना पड़े।

और अंत में, रहस्योद्घाटन की व्याख्या करते समय विनम्रता की एक अच्छी खुराक एक गुण है। दूरी के कारण, इस तथ्य के कारण कि हम पढ़ रहे हैं, फिर से, किसी और का मेल, हम एक ऐसी पुस्तक पढ़ रहे हैं जो छवियों और प्रतीकों में संचार करती है जिनके बारे में हमें जानकारी नहीं है। और पुस्तक से जुड़े सभी विवादों और इसकी व्याख्या के विभिन्न तरीकों को देखते हुए, हमें इसे हमेशा विनम्रता के साथ देखने की जरूरत है और जिस तरह से हमें इसे पढ़ना सिखाया गया है या जिस तरह से हमने इसे अतीत में पढ़ा है, उसे सुधारने के लिए तैयार रहना चाहिए। .

अब, दो अन्य चीजें जो मैं कवर करना चाहता हूं। सबसे पहले, प्रकाशितवाक्य को पढ़ने के बारे में मैंने अभी जो कहा है, उसके प्रकाश में, यह समझना अक्सर सहायक होता है कि पूरी शताब्दी में ईसाइयों ने पुस्तक को कैसे अपनाया है ताकि हम सीख सकें कि क्या टालना है या हमें पुस्तक के प्रति कैसे दृष्टिकोण रखना चाहिए। आम तौर पर, हालांकि यह योजना बहुत सरल है, मुझे लगता है, लेकिन यह बहुत आम है, और यह वर्गीकृत करने की कोशिश करने के लिए एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु है कि ईसाइयों ने पुस्तक को कैसे अपनाया है।

इतिहास में, रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने के लिए चार सामान्य दृष्टिकोण रहे हैं, लेकिन इन सभी में भिन्नता है। पहला वह है जिसे अक्सर प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। इसलिए, यदि आप कभी भी प्रकाशितवाक्य में एक टिप्पणी या रहस्योद्घाटन पर एक किताब पढ़ रहे हैं, और वे एक प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं, तो प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण मूल रूप से कहता है, रहस्योद्घाटन केवल पहली शताब्दी की घटनाओं को संदर्भित करता है।

इसलिए, यह पहली शताब्दी के बाहर किसी भी चीज़ की भविष्यवाणी नहीं कर रहा था। प्रकाशितवाक्य में सब कुछ मूल रूप से पहली शताब्दी में पूरा हुआ था। इसलिए, रहस्योद्घाटन भविष्य के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं है।

यह पहली सदी की वर्तमान स्थिति पर एक तरह की टिप्पणी है। तो, दूसरे शब्दों में, प्रकाशितवाक्य की सभी बातें पहले ही पूरी हो चुकी हैं। लेकिन नए नियम की किसी भी अन्य पुस्तक की तरह, हम अभी भी इसे भगवान के लोगों के रूप में अपने जीवन में लागू कर सकते हैं, लेकिन हमें यह समझना होगा कि रहस्योद्घाटन, इस दृष्टिकोण के अनुसार, जिसे प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है, रहस्योद्घाटन भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर रहा है।

यह केवल उन घटनाओं की भविष्यवाणी करना और उनका वर्णन करना है जो पहली शताब्दी में घटित हो चुकी हैं। दूसरे दृष्टिकोण को ऐतिहासिक दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। मैं इस पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करना चाहता क्योंकि यह वास्तव में अब प्रचलन में नहीं है।

आपने बहुत से लोगों को इसे धारण करते हुए नहीं देखा है, और आप देख सकते हैं कि ऐसा क्यों है। यह दृष्टिकोण कहता है कि रहस्योद्घाटन मूल रूप से इतिहास का पूर्वानुमान है। और इसलिए, इस दृष्टिकोण ने अक्सर ऐसा किया, इसने पूरे इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं को लिया, आमतौर पर तीसरी या चौथी शताब्दी में शुरू हुआ, और यहां तक कि 19वीं और 20वीं शताब्दी तक, इसमें महत्वपूर्ण घटनाओं या आंदोलनों या विचारधाराओं और सोचने के तरीकों और लाइन को शामिल किया गया। उन्हें रहस्योद्घाटन में कुछ घटनाओं के साथ सामने लाया गया।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य को एक तरह से पहले से लिखी गई इतिहास की किताब के रूप में देखा गया था। अब इसमें दिक्कत क्या होगी? आप अपने सिर के ऊपर से क्या देख सकते हैं कि इस दृष्टिकोण में क्या समस्या होगी? वहाँ एक संख्या है, लेकिन एक बुनियादी एक है। फिर, यह दृष्टिकोण काफी समय से चला आ रहा है।

फिर, यह क्या करता है, रहस्योद्घाटन पहले लिखी गई एक इतिहास की किताब की तरह है, और यह इतिहास में मुख्य आंदोलनों और घटनाओं की भविष्यवाणी और भविष्यवाणी करता है। हाँ यह सही है। यह सही है।

क्या होता है जब आप अंत पर पहुँच जाते हैं, और अंत अभी तक नहीं आया है? तब आम तौर पर क्या होता है कि इस दृष्टिकोण को लगातार संशोधित किया जाना चाहिए, ताकि इतिहास में नई घटनाओं और सोच और प्रौद्योगिकी और इस तरह की चीजों में नए बदलावों को ध्यान में रखा जा सके। तो आप बिल्कुल सही हैं। इसे कई बार संशोधित करना पड़ा।

अब आप बहुत से लोगों को इस दृष्टिकोण को अपनाते हुए नहीं देखते हैं। एक तीसरा दृष्टिकोण है जो महत्वपूर्ण है। इसे आदर्शवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण क्या कहता है कि रहस्योद्घाटन है... रहस्योद्घाटन विशेष रूप से इतिहास में किसी विशेष घटना या किसी भी समय को संदर्भित नहीं करता है। यह मूल रूप से ईश्वर और बुराई के बीच लड़ाई का एक भव्य प्रतीकात्मक चित्रण है जो फिर से दर्शाता है कि ईश्वर जीतता है और एक नई रचना में विजयी होता है। तो, यह सिर्फ एक सामान्य प्रतीकात्मक तस्वीर है जो इतिहास में कई बार सच हो सकती है।

तो, हाँ, यह पहली शताब्दी का वर्णन करता है, लेकिन चूँकि यह ईश्वर और बुराई के बीच संघर्ष का एक सामान्य प्रतीकात्मक दृष्टिकोण है, यह चर्च के इतिहास में किसी भी अवधि को संदर्भित कर सकता है जो इसके लिए उपयुक्त हो। तो इसे आदर्श दृश्य के रूप में जाना जाता है। प्रतीक आदर्श प्रतीक हैं।

वे सिर्फ सामान्य प्रतीक हैं। वे किसी विशिष्ट चीज़ का उल्लेख नहीं करते हैं। वे केवल सामान्य प्रतीक हैं जिन्हें कई स्थितियों पर लागू किया जा सकता है।

वह आदर्शवादी के रूप में जाना जाता है। आप फायदे देख सकते हैं। तब हमें यह पता लगाने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि प्रकाशितवाक्य वास्तव में क्या भविष्यवाणी कर रहा है।

वे कहेंगे, ओह, यह कुछ भी भविष्यवाणी नहीं कर रहा है। यह बस एक सामान्य प्रतीकात्मक तस्वीर है जिसे फिट करने के लिए बनाया जा सकता है। जॉन के लिए पहली शताब्दी में, यह उस स्थिति में फिट बैठता था, लेकिन यीशु मसीह के वापस आने तक यह कई और स्थितियों में फिट हो सकता था।

अंतिम दृष्टिकोण जो सबसे लोकप्रिय में से एक रहा है उसे भविष्यवादी के रूप में जाना जाता है, और वह दृष्टिकोण मूल रूप से अध्याय 4 और 5 के बाद रहस्योद्घाटन में लगभग सब कुछ कहता है, रहस्योद्घाटन में लगभग हर चीज भविष्य में किसी समय की अवधि को संदर्भित करती है। यानी, रहस्योद्घाटन में अभी तक कुछ भी नहीं हुआ है। यह सब भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी है।

इसलिए, हमारे दृष्टिकोण से, हम अभी भी इन चीजों के पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जाहिर है, पीछे छोड़ दी गई श्रृंखला इसमें फिट होगी, लेकिन विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण हैं जो भविष्यवादी के लिए उपयुक्त हैं। हर कोई जो यह सोचता है कि रहस्योद्घाटन ही भविष्य है, अंत या उसके जैसी किसी चीज़ की भविष्यवाणी करने का प्रयास नहीं करेगा।

उनमें से बहुत से लोग कहते हैं, नहीं, यह असंभव है, लेकिन फिर भी उनका मानना है कि रहस्योद्घाटन काफी हद तक उन घटनाओं की भविष्यवाणी है जो अभी तक नहीं हुई हैं लेकिन ठीक पहले होंगी और ईसा मसीह के दूसरे आगमन से पहले और इसमें शामिल होंगी। दूसरे शब्दों में, पूर्ववादी दृष्टिकोण कहेगा कि सभी रहस्योद्घाटन पहले से ही है, और भविष्यवादी कहेगा, नहीं, रहस्योद्घाटन अभी तक नहीं है, अगर मैं उस भाषा का उपयोग कर सकता हूँ। बेशक मैं कर सकता हूँ।

मुझे हर वक्त यह करना है। तो, फिर से, कुछ अन्य दृष्टिकोण भी हैं, मुझे लगता है, इन्हें इनमें जोड़ा जा सकता है और जोड़ा जाना चाहिए, लेकिन यदि आप कभी भी रहस्योद्घाटन के बारे में पढ़ते हैं, तो पूरे इतिहास में, कम से कम ईसाई विशेष रूप से, उनके दृष्टिकोण को बड़े पैमाने पर विभाजित किया जा सकता है ये चार आंदोलन. पुनः, दूसरे को छोड़कर, अन्य तीन आज भी रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने के लिए बहुत लोकप्रिय दृष्टिकोण हैं।

अब, तो कौन सा सही है? ठीक है, हो सकता है कि आपने अपने नोट्स के अगले भाग, प्रश्न, क्या हमें चुनना है, का अनुमान लगा लिया हो? मुझे आश्चर्य है कि सेटिंग के आधार पर और साहित्य के प्रकार के आधार पर रहस्योद्घाटन होता है, अगर किसी तरह इन तीनों का संयोजन शायद सही दृष्टिकोण नहीं है। हां, रहस्योद्घाटन, मुझे लगता है कि भूतपूर्व दृष्टिकोण कुछ मामलों में रहस्योद्घाटन के साथ न्याय करता है। यह प्रथम शताब्दी को संबोधित कर रहा है।

यह पाठक की पहली सदी की दुनिया को समझने की कोशिश कर रहा है। यह उन घटनाओं को संदर्भित करता है जो पहली शताब्दी में घटित हो रही हैं या घटित होंगी। इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा, कम से कम मेरी समझ से, केवल 21वीं सदी में होने वाली घटनाओं के एक समूह की भविष्यवाणी करना रहस्योद्घाटन के लिए कोई फ़ायदा नहीं होगा।

इससे पहली सदी के उन पाठकों को क्या लाभ होगा जो सोच रहे हैं कि उन्हें रोम की पूजा करनी चाहिए या नहीं? तो, एक एहसास है कि यह सच है, लेकिन साथ ही, रहस्योद्घाटन ही भविष्य है। यह एक अंत, एक लक्ष्य की ओर इशारा करता है, जहां इतिहास आगे बढ़ रहा है। इसका अंत एक नई रचना के साथ होता है, जिसमें ईश्वर अपना राज्य स्थापित करता है और इतिहास के अंत में एक नई रचना करता है।

तो, एक भविष्य तत्व है. और जॉन के बहुत सारे प्रतीक जो पुराने नियम से सामने आए हैं, वे एक प्रकार के ट्रांस-टेम्पोरल प्रतीक हैं, ऐसे प्रतीक जो निश्चित रूप से विभिन्न स्थितियों में लागू हो सकते हैं और अर्थपूर्ण हो सकते हैं। उनके लिए यह पहला शतक था.

लेकिन जॉन पुराने नियम में उन प्रतीकों को उठाते हैं जिन्हें अतीत में अन्य देशों और अन्य संकटों पर लागू किया गया है। अब, वह उन्हें दोबारा लागू करता है। तो, एक अर्थ में, उनके प्रतीक भी पारलौकिक हैं।

वे आदर्श प्रतीक हैं जिनका एक से अधिक अनुप्रयोग हो सकता है। इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं तो हमें संभवतः इन तीनों दृष्टिकोणों को ध्यान में रखना चाहिए। अब मैं इतना कहकर ही अपनी बात समाप्त करता हूँ।

हम शुक्रवार को इस बारे में थोड़ी और बात करेंगे। हर कोई जानता है कि यह क्या है. और मैं ये कार्टून दिखाता हूँ.

सच में, मैं किसी का या किसी स्थिति का मज़ाक नहीं उड़ा रहा हूँ। मैं बस कुछ सामान्य राजनीतिक कार्टूनों का उपयोग कर रहा हूँ जो पिछले कुछ समय में लोकप्रिय हो गए हैं... यह वाला, पिछले कुछ दिनों में, लेकिन पिछले कुछ महीनों में एक और। अब जब आप इस पर नजर डालेंगे तो यह कार्टून क्या कह रहा है? मेरा मतलब है, यदि आप पाकिस्तान जाएं, तो क्या आपको एक मेलबॉक्स मिलेगा जिस पर 9-11 लिखा होगा और उस पर ये सभी संकेत होंगे... क्या आपको यह मिलेगा? शायद नहीं।

या यदि आपने एक तस्वीर ली... यदि आपने वहां एक कैमरा लिया, अपना डिजिटल कैमरा, और उस परिसर की तस्वीर खींची जिसमें उन्होंने बिन लादेन को पकड़ा था, तो क्या आपको यह मिलेगा? क्या आपकी तस्वीर वैसी ही निकलेगी? शायद नहीं। ये क्या कह रहा है? मैं तलाश नहीं कर रहा हूँ... बस उसके बारे में सोचो। यह राजनीतिक घटना के बारे में कुछ कह रहा है।

एक और, जल्दी से। यह मार्च पागलपन से कुछ महीने पहले का है। लेकिन ध्यान दें कि कोष्ठक का क्या संबंध है... यह \$5 प्रति गैलन के हिसाब से जा रहा है।

फिर, इसका मुद्दा यह है कि अगर मैं वाशिंगटन डीसी या कहीं और गया, तो क्या मुझे यहां पांच आदमी और इस लंबे डंडे के साथ एक अन्य व्यक्ति मिलेगा, क्या मैं उन्हें एक कमरे में इस ब्रैकेट को देखते हुए और इस पर टिप्पणी करते हुए पाऊंगा, सचमुच? नहीं, वह बात नहीं है. मुद्दा यह है कि एक राजनीतिक कार्टून का कार्य हमारे जीवन में घटनाओं की व्याख्या इस तरह से करना है जो सीधी टिप्पणी और गद्य में नहीं हो सकता है। मुद्दा यह नहीं है कि ये शाब्दिक हैं।

मुद्दा यह है कि ये कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे में अपनी बात कहने के प्रतीकात्मक और अतिरंजित तरीके हैं। मेरी राय में, राजनीतिक कार्टून रहस्योद्घाटन के निकटतम साहित्यिक उपमाओं में से एक है जो आज हमारे पास है। फिर, हम पत्र पढ़ते हैं और हम कहानियाँ लिखते और पढ़ते हैं और पत्र और कहानियाँ लिखते हैं, लेकिन आखिरी बार आपने सर्वनाश कब पढ़ा था? अब हम सर्वनाश नहीं पढ़ते-लिखते।

यह रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने में समस्या का हिस्सा है। मेरी राय में, राजनीतिक कार्टून रहस्योद्घाटन जो करने की कोशिश कर रहा है उसके निकटतम साहित्यिक उपमाओं में से एक है। शुक्रवार को, हम इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे और फिर प्रकाशितवाक्य में दो या तीन विशिष्ट ग्रंथों को देखेंगे।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर व्याख्यान 34 था।